JREB-3-HI

यीशु की खोज - प्रोग्राम 3

उद्घोषक: जब यीशु कैसरिया फिलिप्पी में आए, तो उन्होंने अपने चेलों से पूछा, " लोग क्या कहते हें कि मनुष्य का पुत्र कौन है?"

डा क्रेग इवांस: अगर मैं एक सांसारिक इतिहासकार होता और यीशु को बोलते देख रहा होता, तो मैं कहता कि यह व्यक्ति सोचता है कि वह स्वर्ग से आया किसी प्रकार का दूत है।

उद्घोषक: उन्होंने उत्तर दिया, "कुछ लोग कहते हैं, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले, दूसरे कहते हैं एलिय्याह, और कुछ अन्य यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से एक।"

डा एड्विन यामाउची: ऐसे भी कई संकेत हैं जो यीशु को साधारण इंसान की तुलना में अधिक दर्शाते हैं।

उद्घोषक: "तुम क्या कहते हो?" उन्होंने पूछा। " तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूं?"

डॉ डारेल बोक: मुझे लगता है कि आवाज ने यीशु को संबोधित किया: " तुम मेरे प्रिय पुत्र हो, जिससे मैं अधिक प्रसन्न हूं।"

उद्घोषक: शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "आप मसीह हैं, जीवित परमेश्वर के पुत्र।"

आज, यीशु का सवाल इतिहासकारों और धर्मशास्त्रियों, विश्वासियों और अविश्वासियों को एक जैसी चुनौती देता है।कुछ एक ने उनका स्वागत मसीह के रूप में किया, परमेश्वर के पुत्र, जैसा

कि पहली सदी के उनके अनुयायियों ने किया था। दूसरे कुछ कहते हैं कि यीशु ने ना ही कुछ ऐसा कहा और किया जैसा कि सुसमाचारों में अंकित है। फिर भी, यीशु की खोज जारी है।

*****

डॉ जॉन एनकरबर्ग : यीशु अपनी सेवा शुरू करने के बाद, गलील सागर से लगे कफरनहूम शहर गए। पुरातत्वविद हमें बताते हैं कि शिमोन पतरस भी यहां अपने परिवार के साथ रहते थे। उन्हें पतरस के घर के अवशेष मिले हैं और यह भि निर्धारित किया गया है कि घर के कमरों में से एक को चर्च के रूप में इस्तेमाल किया गया था। हमने कफरनहूम की यात्रा की और यहूदी आराधनालय के खंडहरों की जांच की जहां यीशु ने खुद के बारे में लिखे वचनों को खोला और पढ़ा। यह सभास्थल पतरस के घर को दिखता है, संभवता वह घर जिसमें यीशु ने ऐसा कुछ किया जिसे मत्ती, मरकुस, लुका, यूहन्ना, चारों ने ही अभिलिखित किया है।

यीशु के सबसे चौंकाने वाले वक्तव्यों में से एक कफरनहूम में ही हुआ था जब उन्होंने एक लकवे के रोगी से कहा, “हे, पुत्र तेरे पाप क्षमा हुए।” (मरकुस २:५) वहां बैठे यहूदी फरीसी यह सुन कहते हैं, “यह परमेश्वर की निंदा है! परमेश्वर को छोड़ और कौन पाप क्षमा कर सकता है?” (मरकुस २:६-७) इससे यह सवाल उठता है, “यीशु कौन होने का दावा कर रहे थे?”

डॉ डैरेल बॉक: उन्होंने धार्मिक अगुवों से कहा “जिससे तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है, मैं तुझसे कहता हूं उठ और चल (मरकुस २:१०-११)

मुझे यह कहानी पसंद है! एक आदमी को छत से नीचे उतारा जाता है। उसके दोस्त वहां हैं। यीशु ने पहले उससे कहा, "तेरे पाप क्षमा हुए।" वह व्यक्ति खाट पर पड़ा है। मानो वह कह रहा हो, "मैं यहां इसलिए नहीं आया।" मेरा मतलब, अच्छी बात है कि आप मेरे पापों को क्षमा करना चाहते हैं, लेकिन मेरे यहां आने का कारण था कि मैं उठ सकता और चल पाता।" और फिर यीशु क्या करते हैं वे पाप और चलने को जोड़ते हैं ताकि आपके पास पाप के दावे का ऑडियो विजुअल हो, जिसे आप नहीं देख सकते, परमेश्वर के उन के माध्यम से काम करने के साक्ष्य के साथ। ताकि जब वह उठकर चलता है, तो उसका चलना बोले और कहे, "पाप क्षमा हुए और देखो कि क्षमा किसने किया।" और इसलिए उस संदर्भ में यीशु ने दिखाया कि वे कौन है और उनके अधिकार क्या हैं?

डॉ क्लेयर पफैन : पापों को क्षमा करने का अधिकार, ज़ाहिर है, यह केवल परमेश्वर का अधिकार है, पर यीशु अपने चंगा करने की शक्ति में, चाहे चंगा करते हो या पाप क्षमा करते हों, अभी भी एक दिव्य आज्ञार्थक का निष्पादन कर रहे हैं, एक दिव्य विशेषाधिकार।

डॉ बेन विथिंगटन : और निश्चित रूप से भीड़, या यहूदी जो वहां थे, नकारात्मक प्रतिक्रिया देते हैं: वह यह कैसे जान सकता है? वह कैसे ... मेरा मतलब वह मंदिर नहीं गया है, उसने बलि चढ़ाया नहीं है, उसने याजक की घोषणाओं को नहीं सुना है, "तेरे पाप क्षमा हुए।" यीशु को यह कैसे पता था? यीशु यह कैसे कह सकता है? वह ऐसा कुछ कहने की हिम्मत कैसे कर सकता है?

कम से कम मार्कियन रिवायत कहती है कि यीशु का मानना था कि उसके पास पापों की क्षमा की घोषणा करने का अधिकार था। किस तरह के व्यक्ति के पास उस तरह का अधिकार होगा?

डॉ जॉन एनकरबर्ग : हां। और उन्होंने उसे निंदा कहा

डॉ बेन वाइथिंगटन : बिल्कुल, खुद को विशेषाधिकार प्रदान करना जो केवल परमेश्वर के पास होना चाहिए।

डॉ जॉन एनकरबर्ग : लेकिन इस दावे के अलावा कि उनके पास पापों को क्षमा का अधिकार है, क्या यीशु ने खुले तौर पर यह दावा किया कि वे परमेश्वर के पुत्र हैं अद्‌वितीय अर्थ में जो किसी और पर लागू नहीं हुआ?

डॉ एन टी राइट : यीशु अपने बारे में कहते हैं कि वे परमेश्वर के पुत्र : "यदि तुम मुझे स्वीकार करते हैं, तो मेरे पिता तुमको स्वीकार करेंगे," जो भी हो, या "मेरे पिता जो स्वर्ग में है।" (मत्ती १०:३२) और फिर यीशु का यह कहना कि यरूशलेम के विनाश का समय क्या होगा, "केवल पिता ही जानते हैं पुत्र नहीं।" (मत्ती२४:३६) तो जिस प्रकार से यीशु अपने परमेश्वर के पुत्र होने के बारे में बात करते हैं उसे देख नहीं लगता कि प्रारंभिक कलीसिया ने इसे गढ़ा होगा, जैसे कि मरकुस १० कि प्रसिद्‌ध कहानियों की तरह, जहां धनी युवा शासक कहता है, "उत्तम गुरु। "और वे कहते हैं, "उत्तम मत कहो कोई भी उत्तम नहीं केवल एक अर्थात परमेश्वर" (मरकुस १०:१७-१८) अब, प्रारंभिक चर्च ने निश्चित रूप से इसे नहीं गढ़ा।

डॉ जॉन एनकरबर्ग : अब, अगर कोई केवल आलोचकों की ही बात का उपयोग करना चाहे कि वही धारणा विश्वसनीय माने जा सकते हैं जो विभिन्न स्रोतों में पाए जाते हैं, तब भी सबूत यही दिखाते हैं कि यीशु ने खुद को परमेश्वर के पुत्र के रूप में संदर्भित किया है।

डॉ गैरी हबर्मस : सबसे पहले, मत्ती ११:२७ में और इसके समानांतर लुका में, हमारे पास एक ऐसा वचन है जिसे आलोचक "क्यू" कहते हैं, आदि कहावतों के दस्तावेज । बहुत, बहुत पुराने। उनका मानना है यह सुसमाचारों से कई दशकों पुराना है। और फिर भी मत्ती ११:२७ में और

इसके समानांतर (लूका १०:२२) यीशु कहते हैं, “पिता को छोड़कर कोई भी पुत्र को नहीं जानता, और कोई पुत्र को नहीं जानता, केवल पिता; और वह जिस पर पुत्र उन्हे प्रकट करना चाहे।”

अब इस वचन में यीशु परमेश्वर का अनूठा ज्ञान होने का दावा करते हैं, और यह पाया जाता है “क्यु” की आदि परतों में, आलोचकों के इसे व्यवस्थित करने के तरीके के अनुसार, और यह एक कठिन पाठ है।

डॉ जॉन एनकरबर्ग : सुसमाचार के लेखकों ने हमें यह भी बताया कि यीशु ने परमेश्वर को "अब्बा" कहा था। (मरकुस १४:३६) क्या यह यीशु कि सोच का सबूत है कि उनका परमेश्वर के साथ एक विशेष और अनूठा रिश्ता है?

डॉ बेन विथिंगटन : हमारे पास अच्छे, मजबूत, ऐतिहासिक सबूत हैं कि यीशु ने परमेश्वर से "अब्बा" कह कर प्रार्थना की, और हमने साक्ष्य के प्रमाणित टुकड़ों को गुणा किया है कि उन्होंने स्वयं को परमेश्वर के विशेष या अद्‌वितीय पुत्र के रूप में देखा है।

डॉ जॉन एनकरबर्ग : लोगों को बताएं की “अब्बा” का अर्थ क्या है।

डॉ बेन विथिंगटन : ठीक है, अब्बा का मतलब है “पिता।” इसका तात्पर्य अधिक... यह साधारणतः इस्तेमाल में आने वाला शब्द “डैडी” नहीं है, लेकिन इसका मतलब है “प्रिय पिता।” यह स्वर्गीय माता-पिता के साथ घनिष्ठता को दर्शाता है। और यीशु का मानना था कि उनके अनूठे रिश्ते ने उन्हें विशेष और खास अर्थ मे “परमेश्वर का पुत्र” बना दिया था। और इसके बहुत सारे सबूत हैं। यह सिनोप्टिक्स मे यूहन्ना के सुसमाचार में, और पौलुस के पत्रों में भी है। (रोम ८:१५ ; गल४:६) यह पुरे नए नियम मे है। यह यीशु की भविष्यवाणी की सबसे विशिष्ट चीजों में से एक है, कि वे परमेश्वर के पुत्र थे।

डॉ गैरी हबर्मस : तो आपके पास "क्यू" में एक बयान है, आपके पास "अब्बा" है। और शायद सबसे मजबूत कथन, मरकुस १३:३२। अब, अगर आप इसे देखते हैं तो आप सोचेंगे, "ओह! उनका दिमाग तो ठीक है?" यह वचन मसीह के ईश्वरत्व को लेकर नहीं है क्योंकि यीशु कह रहे हैं, "मेरे आने का समय।" वे कह रहे हैं, "वह समय, कोई भी व्यक्ति नहीं जानता; स्वर्गदूतों नहीं जानते; पुत्र भी नहीं बल्कि केवल पिता।" इस वचन की मजबूती का कारण यह है कि यीशु पिता के पुत्र या परमेश्वर के पुत्र हैं क्योंकि वे कहते हैं कि वे अपने आने का समय नहीं जानते।

मेरा मुद्दा यह है। यदि चर्च इस कथन को बना रहा है और शब्दों को यीशु के होंठों पर डाल रहा है, तो वह अपने आने का समय क्यों नहीं जानते? अब, मुझे लगता है कि परंपरागत रूप से समझाया जा सकता है क्योंकि यीशु का मानव स्वभाव था / यीशु का दिव्य स्वभाव था। लेकिन जैसा भी हो, वह वाक्य ऐसा प्रतीत नहीं होता जैसे इसे गढ़ा गया हो क्योंकि यह बहुत शर्मनाक है। बस कहो कि उन्होंने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया था। नहीं। उन्हें कहना था कि "पुत्र अपने आने का समय नहीं जानता।" और यह एक कठोर वाक्य है। तो यीशु ने शायद यह कहा था।

आपके पास "क्यू" कथन है; आपके पास "अब्बा" कथन है; आपके पास "मेरे आने का समय मुझे नहीं पता" कथन है। और मुझे लगता है कि इन सभी मामलों में हमारे पास सबूत हैं कि यीशु ने परमेश्वर के पुत्र होने का दावा किया था, जैसा सुसमाचार घोषित करते हैं।

डॉ जॉन एनकरबर्ग : पहाड़ी उपदेश में यीशु के दावों पर हम कुछ और सबूत पाते हैं। ऐसी मान्यता है की गलील सागर के पास एक पहाड़ी पर उक्त जगह है जहां यीशु ने इस प्रसिद्ध उपदेश का प्रचार किया। अंत में मत्ती अभिलिखित करते हैं, जब यीशु यह बातें कह चुके, तो

ऐसा हुआ कि भीड़ उनके उपदेश से चकित हुई, क्योंकि वह उनके शास्त्रियों के समान नहीं परंतु अधिकारी के समान उन्हें उपदेश देते थे। (मत्ती ७:२८) यीशु के पास किस तरह का अधिकार था?

डॉ डैरेल बॉक : उन्होंने पाप क्षमा किए। उसने यहूदियों को बताया कि सब्त के दिन वे क्या कर सकते हैं और क्या नहीं कर सके। अब, सब्त दस आज्ञाओं में से एक है। आप दस आज्ञाओं के साथ छेड़छाड़ नहीं करते हैं जब तक कि आपके पास दस आज्ञाओं के साथ छेड़छाड़ करने का अधिकार न हो।

उन्होंने बताया कि किसके साथ संबंध होना चाहिए और किसके साथ नहीं। उन्होंने दावा किया कि वे पिता के दाहिने हाथ पर बैठ सकते हैं। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो सीधे परमेश्वर की उपस्थिति में जा सकता है या बैठ सकते हैं। आप के पास में काफी अधिकार और शक्ति होने चाहिए इस ख्याल को लाने के लिए कि आप परमेश्वर के बगल में बैठ सकते हैं ।

डॉ जॉन अकरबर्ग : पहाड़ी उपदेश में यीशु ने सिखाया, "तुम सुन चुके हो कि कहां गया था, 'व्यभिचार न करना।'"(मत्ती ५:२७) हर कोई जानता था कि यह दस आज्ञाओं में से एक है। फिर वे कहते हैं, "लेकिन मैं तुमसे कहता हूं," (मत्ती ५:२८) और जो परमेश्वर ने कहा था उसमें जोड़ते हैं। ऐसा करते हुए, उन्होंने संकेत दिया कि उनके शब्द परमेश्वर के अधिकार में समान थे।

डॉ क्रेग इवांस : उन्होंने शिक्षा दी एक अधिकारी के तौर पर, न कि शास्त्री के रूप में। और मुझे लगता है कि अधिकार का मतलब न केवल वे घोषणा करते कह सकते थे, "सुनो, मुझे पता है कि तुमने यह सुना है तुमने वह सुना है, पर वह इस तरह से होनी चाहिए।" यह उनकी शिक्षण शैली है, पर इसका समर्थन जिस तरह से वह अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देते थे वह भी

करते हैं। यीशु बस इतना कहेंते, “चुप रहो और निकल जाओ!” और, वैसा हुआ। और लोग बस यह देख आश्चर्यचकित थे। यह एक ऐसा अधिकार है जिसे हमने पहले कभी नहीं देखा।

डॉ एडविन यामाउची : कई अंतर्निहित संकेत भी हैं जो दर्शाते हैं कि यीशु सामान्य मनुष्य से बढ़कर थे। पापों को क्षमा करने में सक्षम होने का उनका दावा; परमेश्वर पिता के साथ उनकी एकता; इसका परिणाम रहा यहूदियों की प्रतिक्रिया जो उन्हें पथराव करने के लिए प्रेरित हुए यह कहते हुए कि परमेश्वर पिता के साथ उनकी करीबी निंदाजनक है।

डॉ जॉन एनकरबर्ग : यीशु के बारे में एक और सवाल उठाया गया है, “क्या उन्होंने कभी मसीहा होने का दावा किया था?”

डॉ एनटी राइट : अक्सर यह समकालीन विद्वता में कहा जाता है, और करीब एक शताब्दी से अधिक समय तक रहा है, कि यीशु ने यह नहीं सोचा होगा कि वे मसीहा थे सनकी लोग ही ऐसा सोच सकते हैं पर यीशु काफी कुशल, आदि, शिक्षक थे। और जीसस सेमिनार ने अक्सर कहा है, "ठीक है, यीशु ने लोगों को नम्रता सिखाई और सिखाया कि उन्हें स्व त्यागी होना चाहिए, तो वह एक ही समय में खुद को मसीहा कहते हुए दिखावा कैसे कर सकते हैं?” यह पहली शताब्दी के यहूदी धर्म पर और यीशु की कार्यप्रणाली पर गहरी गलतफहमी है। न केवल वे परमेश्वर के राज्य की घोषणा कर रहे थे जिसे वे स्वयं लेकर आएं हैं, ऐसा लगता है वह सिर्फ अपने आप को इसकी घोषणा करने वाला भविष्यवक्ता नहीं मानते, बल्कि वह स्वयं मसीहा थे।

डॉ डैरेल बॉक : उन्होंने कैसरिया फिलिपी में मसीहा की कबुली स्वीकार कर ली। (मत्ती १६; मरकुस ८) अब, वे यह समझाने लगे कि इसका मतलब क्या था क्योंकि शिष्यों को इसका मतलब समझ में नहीं आया था जब उन्होंने शुरुआती बिंदु पर यह स्वीकार किया था।

डॉ जॉन एनकरबर्ग : इसका क्या मतलब था?

डॉ डैरेल बॉक : खैर, आखिरकार, इसका मतलब क्या था, वे सिर्फ एक विजयी व्यक्ति नहीं होने वाले थे, बल्कि कष्ट भोगने वाले भी। लेकिन यहूदी धर्म के संदर्भ में, कम से कम हमारे साक्ष्यों के आधार पर "कष्ट भोगने वाले मसीहा" की कोई श्रेणी नहीं थी।

डॉ जॉन एनकरबर्ग : मृत सागर स्क्रॉल में जानकारी के परिणामस्वरूप, हम जानते हैं कि यीशु ने जो कुछ कहा था, उस समय के लोगों के लिए एक स्पष्ट संकेत था कि वे मसीहा होने का दावा कर रहे थे। आप उन विद्वानों से क्या कहेंगे जो कहते हैं कि शुरुआती शिष्यों ने यीशु की मसीह की अवधारणा गढ़ा था?

डॉ क्लेयर पफैन : मुझे लगता है कि यह दूसरे मंदिर काल से यहूदी साहित्य पर हंसने योग्य है। हमें मृत सागर स्क्रॉल पर गौर करना चाहिए, उदाहरणतः, यीशु के आने से पहले यहूदियों के बीच जो मसीही आशा थी, उस पर। निश्चित रूप से, ४Q५२१ जैसी चीजों को हम अब पहचानते हैं, यह गुफा 4, कुमरन, पांडुलिपि 521 है - जिसमें कहा गया है जब मसीहा आएंगे, वह अंधों को चंगा करेंगे, लंगड़ों को ठीक करेंगे, और मरे हुए को जिलाएंगे। हम, स्वयं यीशु द्वारा दिए गए इस दावे को देखते हैं लूका ७ में जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले अपने शिष्यों को यीशु के पास पूछने भेजते हैं कि' "क्या वे आप ही हैं? वास्तविक। या फिर हमें किसी और का इंतजार करना होगा?" (लूका ७:२०) यीशु कहते हैं, "जो तुम देखते हो उसे यूहन्ना को बताओ : अंधे चंगे हो रहे हैं, लंगड़े चल रहे हैं, और मृत जिलाए गए हैं।" (लूका ७:२२) यह मसीहीयत से पहले, यहूदी मसीही आशा है जो यीशु में परिपूर्ण होती नजर आ रही है।

डॉ क्रेग इवांस : मुझे लगता है कि जीसस सेमिनार अपने स्वयं के मानदंडों में असंगत है, इसका एक अच्छा उदाहरण है यीशु की मसीही आत्म-समझ का पूरा प्रश्न। वे मानते हैं कि यह प्रारंभिक चर्च सुसमाचार में वापस पढ़ रहा है। यहां समस्या है: आपके पास एकाधिक प्रमाणन हैं। परंपरा में हर जगह, यीशु को मसीहा माना जाता है; सभी चार सुसमाचार में, पत्रों में, नए नियम में सबकुछ। और ईस्टर के बाद में दुनिया में कैसे उभर सकता है, अगर यीशु ने कभी मसीहा होने का दावा नहीं किया था, तो उसने कभी उसके बारे में सोचने की अनुमति नहीं दी थी?

डॉ जॉन एनकरबर्ग : तो ऐतिहासिक साक्ष्य जिनकी हमने जांच की, इंगित करते हैं कि यीशु ने पापों को क्षमा किया, सिखाया कि वे परमेश्वर के अद्‌वितीय पुत्र हैं, मसीहा होने का दावा किया, और खासकर यहूदी जिन चमत्कारों के विषय सोचते थे कि मसीहा करेंगे, उन्हें किया। लेकिन गलील के गांवों में प्रचार करने के बाद, यीशु यरूशलेम गए, यहूदी जीवन का केंद्र, और एक हफ्ते बाद, वे मारे गए। क्यूं कर? दोबारा लौटने पर।

*****

डॉ जॉन एनकरबर्ग : सुसमाचार के वृत्तांतों का कहना है कि फसह के पहले यीशु ने एक गधे पर सवार यरूशलेम में प्रवेश किया था। सुसमाचारों के अनुसार भीड़ ने उनका अभिवादन ताड की शाखाओं को लहराते हुए और उन्हें मसीह कहकर जय जयकार करते हुए किया था। (मरकुस ११:१-१०) लेकिन उन लोगों का क्या जो दावा करते हैं कि जब भी यहूदी लोग फसह के लिए यरूशलेम पहुंचते हैं तो वे जयघोष के साथ उत्सव मनाते हुए प्रवेश करते हैं; वे सिर्फ सामान्य रूप से गा रहे थे और नारे लगा रहे थे, वे यीशु के बारे में नहीं गा रहे थे?

डॉ क्रेग इवांस : कुछ ऐसे लोग हो सकते हैं जिन्होंने शहर में प्रवेश करने वाले कुछ तीर्थयात्रीयों को वैसे नारों के साथ बधाई दी हो, लेकिन वे अपने कपड़ों को सड़क पर नहीं फेंकते; वे ताड की शाखाओं को नहीं लहराते। और, वे इस तरह एक गधे पर सवार किसी को बधाई नहीं देते। यह सभी चीजें किसी को भी याद दिलाएंगे, जो इज़राइल के इतिहास को जानता है, यह व्यक्ति कुछ जकर्याह ९:९ कि तरह महसूस होता है, राजा जो दीनता के साथ शहर में प्रवेश कर रहा है, वह यही कर रहे हैं। और ताड की शाखाएं और कपड़े जो सड़क पर बिछाए गए हैं, इसी प्रकार उन्होंने इस्राएल के पिछले राजाओं के शहर में प्रवेश के समय भी किया। तो, वे जानते थे कि वे क्या कर रहे थे। तो यह उन तीर्थ यात्रियों की ओर से मसीही अभिवादन था।

डॉ जॉन एनकरबर्ग : जब यीशु यरूशलेम में फसह के लिए आए थे तो कितने लोग उन के साथ / पीछे थे? एबीसी स्पेशल में दिखाए गए कुछ विद्वानों ने कहा कि यीशु के साथ केवल १० या २० अनुयायी थे।

डॉ क्रेग इवांस : मैं उस कथन से आश्चर्यचकित था क्योंकि सुसमाचार के वृत्तांतों में हम जो कुछ पढ़ते हैं वह यह है कि शास्त्री और याजक यीशु के खिलाफ कदम उठाना चाहते थे, लेकिन यीशु कि लोकप्रियता और उनके साथ कि भीड़ के कारण ऐसा नहीं कर पाए। अगर यीशु के साथ १०, २० या ३० अनुयाई ही होते तो उन्हें आसानी से बंधक बनाया जा सकता था अंतिम हफ्ते के शुरुआत में ही, उन्हें साजिश रच कर धोखे से रात में यीशु को चुपके से यीशु को पकड़ने की जरूरत नहीं होती क्योंकि कुछ ही लोग उनके साथ होते। और इसलिए यह तथ्य कि उन्हें चुपके तरीके का इस्तेमाल करना पड़ा यीशु को बंदी बनाने के लिए, यह दिखाता है कि गलील से बड़ी संख्या में उनके समर्थक रहे होंगे, जो दक्षिण में उनके साथ थे, और नए विश्वासी भी, आप कह सकते हैं यहूदिया और यरूशलेम से भी।

डॉ जॉन एनकरबर्ग : यीशु के अनुयायियों की संख्या पर सवाल पूछने के अलावा, सवाल उठाया कि आखिर यीशु यरूशलेम जाना ही क्यों चाहते थे। क्या उन्हें इल्म नहीं था कि उन्हें मार डाला जा सकता है?

डॉ क्रेग इवांस: मुझे लगता है कि वह समझ गया कि उसे मरना होगा, और कोई भविष्यद्वक्ता यरूशलेम के बाहर मर जाएगा। [लूका 13:33] और इसलिए, यीशु के पास अपने मिशन को पूरा करने और पूरा करने के लिए भविष्यवाणी की नियति की भावना है। यह यरूशलेम जाने का समय था, और फसह के समय में जाने का बेहतर समय, वह समय जो परमेश्वर के लोगों के उद्धार का जश्न मनाता है।

डॉ जॉन एनकरबर्ग : यीशु मंदिर में जा कर व्यापारियों की मेज उलट देते हैं, क्या उसी समय से उन्हें चिन्हित कर लिया गया था?

डॉ डैरेल बॉक : हां। मेरा मतलब है, बिल्कुल। वह इज़राइल के सबसे पवित्र स्थान में है।

डॉ बेन वाइथिंगटन : उन्होंने जो किया है, वह इस प्रक्रिया में बाधा डालता है, ना केवल दान के पैसों पर जो संस्थान के अस्तित्व का जरिया है, मंदिर एक संस्थान के रूप में, लेकिन उन्होंने उस प्रक्रिया को बाधित कर दिया जो बलिदान की ओर जाता है।

डॉ क्रेग इवांस: दुनिया में ऐसा कोई मौका नहीं है कि कैफास इसके बारे में नहीं सीखेंगे और इसके बारे में बहुत नाराज होंगे। लेकिन उसे आकार देने के लिए, यीशु ने मंदिर परिसर में कार्रवाई की है और इसके तुरंत बाद, शायद अगले दिन या फिर हम मार्क में समय रेखा की व्याख्या कर रहे हैं, सत्तारूढ़ पुजारियों का एक प्रतिनिधि यीशु के पास आता है और कहता है, "किस अधिकार से तुम इन चीजों को कर रहे हो? "[मरकुस 11:28] मेरा मतलब है, वे अभी भी

वहां खड़े हैं और वह घूमता है और अपने शिष्यों से कहता है:" एक आदमी के पास दाख की बारी थी ... "[मरकुस 12: 1] और वह यशायाह 5 की ओर इशारा करते हुए, इस दृष्टांत को बताता है। लेकिन वह इस दृष्टांत में नए पात्रों को पेश करता है। यशायाह ने दाख की बारी (किसान 5) किसानों के बारे में कुछ नहीं कहा है, लेकिन यीशु करता है। और, ज़ाहिर है, उसने सत्तारूढ़ पुजारियों को उनके दृष्टांत में पेश किया है, और वे मानते हैं कि उन्होंने उनके खिलाफ एक दृष्टांत बताया है। उसने सवाल का जवाब दिया है, "वह किस अधिकार से इन चीजों को करता है?" भगवान से। वास्तव में, उससे अधिक; वह भगवान का पुत्र है जो दाख की बारी में आया है। और ये लोग, सत्तारूढ़ पुजारी, उसे मारने वाले हैं। और वे कहकर चले गए, "हमें इस लड़के को नष्ट करना है। वह गंभीर परेशानी है क्योंकि उसने अप्रत्यक्ष रूप से हमें हटाए जाने और प्रतिस्थापित करने की धमकी दी है। तो यह बात है। यह अब बिंदु पर बढ़ गया है, हमारे पास है ... यह या तो हम या हम हैं। यह शहर हम दोनों के लिए काफी बड़ा नहीं है। हमें उससे छुटकारा पाना होगा। "

डॉ जॉन एनकरबर्ग : खतरे से अवगत, यीशु प्रार्थना करने के लिए गेथसेमेन बाग गए। एबीसी स्पेशल के कुछ विद्वानों ने यीशु को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित किया जो इस घटना से चकित और भयभीत हो गए; ऐसा व्यक्ति, जो डर के कारण, एक पूर्ण मानसिक और रूप से टूटने के कगार पर थे। आगे यह बताया गया कि जब यीशु ने अपने लिए आने वाले सैनिकों को देखा तो यीशु आसानी से भाग सकते थे, बजाय इसके, उनके हाथ आने का फैसला किया ।

डॉ क्रेग इवांस: वह आत्महत्या नहीं कर रहा है क्योंकि वह अपना जीवन नहीं लेता है। लेकिन, उस अवलोकन के लिए कुछ सच है। अगर यीशु भागना चाहता था, तो वह भाग सकता था।

यीशु के पास सूचनार्थियां हैं; वह कुछ हद तक जानता है कि शहर में क्या चल रहा है। वह जानता था कि यह गर्म था, उसे पता था कि उसे सावधान रहना था। ऊपरी कमरे के लिए गुप्त व्यवस्था की गई थी। इसलिए, अगर यीशु बस अपना जीवन बचाना चाहता था, अगर वह उसका उद्देश्य था, तो उसे गिरफ्तार करने से पहले एक या दो दिन शहर से बाहर निकलना होता। लेकिन, नहीं, वह अपनी मंत्रालय को पूरा करना चाहता था। मेरा मानना है कि वह ईमानदारी से मानते थे कि उनकी मृत्यु को पूरा करने के लिए उनकी मृत्यु आवश्यक थी।

डॉ जॉन एनकरबर्ग : फिर यीशु को मुकदमे के लिए ले जाया गया। मरकुस में दो बार: रात में एक बार, पहली सुबह में । मत्ती में भी हम यही पाते हैं। लुका में केवल एक यहूदी परीक्षण है, बस सुबह में। युहन्ना में हमारे पास कोई यहूदी परीक्षण नहीं है। क्या हमारे पास विरोधाभासी प्रलेख हैं?

डॉ डैरेल बॉक : नहीं। नहीं यह है चयनात्मकता। मुझे लगता है कि मरकुस और मत्ती हमें पूर्ण चित्र प्रदान कर रहे हैं। मुझे लगता है कि लुका ने हमें रीडर डाइजेस्ट संस्करण दिया है और मुझे लगता है युहन्ना, अपनी सामान्य शैली की तरह ही, हमें परीक्षण दृश्य या या पूछताछ के दृश्य दे रहे हैं जिसके बारे में हम अन्यथा नहीं जान पाते।

और फिर, परीक्षण में पूछताछ के विषय, यह एक भव्य न्यायपीठ जांच है; केवल औपचारिक परीक्षण नहीं। अगर यह एक सामान्य मुकदमा होता, तो वे पर्व के दिन नहीं मिलते। लेकिन क्योंकि यह एक विशेष स्थिति है, आपात स्थिति, पिलातुस भी शहर में मिल गया है। वे सप्ताहांत काम खत्म कर सकते हैं, अगर पूरा जो़र लगाएं तो। वे जो़र लगाते हैं और पूरा करते हैं ।

डॉ जॉन एनकरबर्ग : मरकुस अभिलेखित करते हैं: “महायाजक उठकर आगे आया और यीशु से पूछा , ‘क्या आप मसीह हैं, परम धन्य के पुत्र?’ और यीशु ने कहा, ‘मैं हूं, और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे और आकाश के बादलों के साथ आते देखोगे। ‘तब महायाजक ने अपने कपड़े फाड़ते हुए कहा,‘ हमे गवाहों की और क्या ज़रूरत है? तुमने यह निंदा सुनी तुम्हारी क्या राय है उन सब ने कहा कि यह वध के योग्य है।” (मरकुस १४:६०-६४)

डॉ गैरी हबर्मस : उस समय, जब महायाजक पूछता है, “क्या आप मसीह हैं, परम धन्य के पुत्र?” ध्यान दें कि यीशु क्या करते हैं। “क्या आप मसीह (मसीहा), परमेश्वर के पुत्र हैं"? और यीशु कहते हैं, एगो एईमी, “मैं हूं।” और फिर वे परमेश्वर के पुत्र प्रश्न को मनुष्यों के पुत्र के उत्तर में बदलते हैं। वे कहते हैं, “मैं हूं मसीह, परमेश्वर का पुत्र, और तुम मनुष्य के पुत्र को न्याय में स्वर्ग के बादलों के साथ आते देखोगे।” (मरकुस : १४:६१-६२) और महायाजक निन्दा की औपचारिक घोषणा करता है। अपने कपड़े फाड़ता है। वह कहता है, “बाकी के गवाह घर जा सकते हैं। हमारा काम हो गया।” (मरकुस : १४:६३-६४)

डॉ क्रेग इवांस: यह एक ऐसा मामला है जहां यीशु स्वयं स्पष्ट रूप से अपनी मसीही पहचान की पुष्टि करता है और, मेरी राय में, सुसमाचार की सत्यता को इंगित करता है। यदि सुसमाचार कथाएं हैं, तो वे यीशु को हर समय चारों ओर घूमने जा रहे हैं और मसीही चीजें कर रहे हैं। सुसमाचार ऐसा नहीं करते हैं और मुझे लगता है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि सुसमाचार वास्तव में क्या हुआ, जो वास्तव में यीशु ने कहा था।

डॉ गैरी हबर्मस : अब, किस बात ने उन्हें फंसा दिया? मरकुस १४ में, यीशु कहते हैं, एगो एईमी, मैं परमेश्वर का पुत्र हूं। आगे कहते हैं, “और तुम मनुष्य के पुत्र को न्याय में स्वर्ग के बादलों के साथ आते देखोगे।” (मरकुस : १४:६२) पहली बात यह दानिय्येल ७:१३,१४ से आभासी

उद्धरण है। वह पूर्ववर्ती व्यक्ति होने का दावा करते हैं जो प्राचीन काल से परमेश्वर के राज्य की स्थापना के लिए आए हैं। और दूसरी बात, वह इस गूढ़ वाक्यांश का उपयोग करते हैं, “बादलों के साथ आ रहा है।” इस वाक्यांश का प्रयोग परमेश्वर के संदर्भ के रूप में वचन में दर्जनों बार किया गया है। और यीशु ने कहा, “वह मैं हूं।”

डॉ डैरेल बॉक : वे उनसे पूछते हैं कि क्या वह मसीहा है क्योंकि उन्हें पिलातुस के पास ले जाने के लिए राजनीतिक आरोप की आवश्यकता है। अगर वे कहते हैं कि वे मसीहा है, तो उन्हें अपना आरोप मिल गया, वे पिलातुस तक जा सकते हैं, वे कह सकते हैं, “वह राजा बनने का दावा कर रहा है। आपको उसे रोकना होगा!” अगर एक बात जिसकी रोम परवाह नहीं करता, जब लोग खुद को राजा कहते और अपने आसपास अनुयायियों को इकट्ठा करते हैं, “और इसे रोकने की जिम्मेदारी आप की है।” ऐसा होने पर वह रोम तक जा सकते हैं। यीशु इससे बढ़कर कहते हैं। वे कहते हैं, “ केवल इतना ही नहीं कि मै वह मसीह हूँ, सिर्फ इतना हि नहीं, मैं वह हूं जिसे न्याय करने का अधिकार दिया जाने वाला है। और यहां मैं परीक्षण पर नहीं हूं, तुम हो!”

"एक दिन मैं बादलों पर मनुष्य के पुत्र के रूप में वापस आने जा रहा हूं और स्वर्गीय न्यायाधीश होऊंगा। और तुम मुझे मारने के बारे में सोच रहे हो?” यह जबरदस्त समय है। एक ऐसा समय जिसमें यहूदियों ने जिन दावों को यीशु के खिलाफ सुना, उन्हें ही अब परमेश्वर महीमित करने जा रहे हैं। और यहां देखिए दो विचारधाराओं का टकराव, मुकदमे के पूछताछ के दौरान।

डॉ जॉन एनकरबर्ग : क्या यहूदी नेताओं ने इसे वैसा समझा?

डॉ क्रेग इवांस: ओह, मुझे लगता है कि वे इसे इस तरह से समझते हैं। यही कारण है कि महायाजक अपने वस्त्रों को पोंछता है, चिल्लाता है "निन्दा! हमें किसी अन्य गवाह की

आवश्यकता नहीं है। "वे सभी सहमत हैं, उन्होंने उन्हें मौत की निंदा की है, और उन्होंने रोमन गवर्नर को निष्पादन के लिए सौंप दिया है।

डॉ जॉन अकरबर्ग : पिलातुस अनिच्छा से क्रूसीकरण द्वारा यीशु को मौत की सजा देने के लिए सहमत हुआ, और यह इतिहास का एक प्रमाणित तथ्य है कि यीशु क्रूस पर मर गए थे। लेकिन आगे क्या हुआ? कुछ ऐतिहासिक तथ्य जिन्हें सभी विद्वानों को जांचना चाहिए कि अपने जीवन के अंत में यीशु के साथ क्या हुआ, और हम इन तथ्यों को आगे देखेंगे।

****

हमारे टीवी प्रोग्राम देखने के लिए मुफ्त में डाऊनलोड कीजिए जॉन एन्करबर्ग ाो

एप

"घ्द्धठ्ठन्र् द्यद्ग ठ्ठड़ड़ड्ढद्रद्य ख्ड्ढद्मद्वद्म क्ण्द्धत्द्मद्य" ऋ

ख्ऋद्मण्द्दध्र्.द्दद्धढ़

@JAshow.org

क्द्दद्रन्र्द्धत्ढ़ण्द्य **2016** ऋच्डक्ष्